## e| pkgrk g° fd r|e vkj cM gk tkvkA

जब आप कोनपेइतो नामक मिश्री खाते हैं, आपके पूरा मुंह में मिठास फैलती है। धीरे धीरे मिश्री के कोने पिघलकर गोल हो जाते हैं। "कोनपेइतो जसै आप भी अपने कोनों को छाँटकर आपका हृदय गोल बनाओ"। अच्छा, समझ गया। लेकिन यह छोटा हो गया है। क्या आप इसे एक और बड़ा गोड़ाई में बना सकते हैं ? जीवन का कठिन समय में भी बिना भागे सामना करता है। चरित्र विकास बनता है। वे कोनों के बीच के रिक्त स्थान को एक एक भर जाते हैं। आप जितनी अधिक कठिनाइयां पार करेंगे, गोल उतना ही सुंदर होगा। कोना को व्यक्तित्व के रूप में भी व्याख्या कर सकता है, यह अपना महत्वपूर्ण व्यक्तित्व कह सकता है। हम इस तरह सोचकर बच्चे का पालन–पोषण करना चाहता हैं।

**आनंदमय जीवन : तेन्रिक्यो**



e| pkgrk g° fd r|e vkj cM gk tkvkA



जब आप कोनपेइतो नामक मिश्री खाते हैं, आपके पूरा मुंह में मिठास फैलती है। धीरे धीरे मिश्री के कोने पिघलकर गोल हो जाते हैं। "कोनपेइतो जसै आप भी अपने कोनों को छाँटकर आपका हृदय गोल बनाओ"। अच्छा, समझ गया। लेकिन यह छोटा हो गया है। क्या आप इसे एक और बड़ा गोड़ाई में बना सकते हैं ? जीवन का कठिन समय में भी बिना भागे सामना करता है। चरित्र विकास बनता है। वे कोनों के बीच के रिक्त स्थान को एक एक भर जाते हैं। आप जितनी अधिक कठिनाइयां पार करेंगे, गोल उतना ही सुंदर होगा। कोना को व्यक्तित्व के रूप में भी व्याख्या कर सकता है, यह अपना महत्वपूर्ण व्यक्तित्व कह सकता है। हम इस तरह सोचकर बच्चे का पालन–पोषण करना चाहता हैं।

आनंदमय जीवन : तेन्रिक्यो

No.9(ヒンディー語)

करने की इच्छा से प्रयास करोगे तो भी सिद्ध नहीं,
करने की इच्छा से न होने पर भी सिद्ध होकर आता है।
( परमेश्वर का वाणी "ओसाशिजु" = 15 मार्च 1893)

यदि आप जो कुछ भी करते हैं वह अच्छा होगा, तो आप संतुष्ट रहेंगे। लेकिन, जब आपकी उम्मीदों के विपरीत हो जाती हैं, तब आप चिन्तित और आतुर होंगे।

यद्यपि परमेश्वरने हमें मन का स्वतंत्र रूप से उपयोग करने की अनुमति दी है, फिर भी सब कुछ आपकी उम्मीद जैसे नहीं होते हैं।

हम परमेश्वर की गोद में जीवित रहते हैं। अपने वश से बाहर रहने का जीवन सहित अपने मन के उपयोग करने की विधि अनुसार, उद्धारित होने के लिए परमेश्वर अदृश्य धागा खींचकर, हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं। यदि आप ऐसा सोच सकें तो जो होगा उसे आप संतुष्ट हो जायेंगे।

करने की इच्छा से प्रयास करोगे तो भी सिद्ध नहीं,
करने की इच्छा से न होने पर भी सिद्ध होकर आता है।
( परमेश्वर का वाणी "ओसाशिजु" = 15 मार्च 1893)

यदि आप जो कुछ भी करते हैं वह अच्छा होगा, तो आप संतुष्ट रहेंगे। लेकिन, जब आपकी उम्मीदों के विपरीत हो जाती हैं, तब आप चिन्तित और आतुर होंगे।

यद्यपि परमेश्वरने हमें मन का स्वतंत्र रूप से उपयोग करने की अनुमति दी है, फिर भी सब कुछ आपकी उम्मीद जैसे नहीं होते हैं।

हम परमेश्वर की गोद में जीवित रहते हैं। अपने वश से बाहर रहने का जीवन सहित अपने मन के उपयोग करने की विधि अनुसार, उद्धारित होने के लिए परमेश्वर अदृश्य धागा खींचकर, हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं। यदि आप ऐसा सोच सकें तो जो होगा उसे आप संतुष्ट हो जायेंगे।